**स्थान नाटी ईमली**

**इन्टरव्यू २६**

प्र: आपका नाम क्या हैं ?
ज: मेरा नाम इरशाद है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 30 साल है।

प्र: आप बुनकारी का काम करते हैं, या बुनकारी से जुड़ा कोई दूसरा काम ?
ज: करते रहे तो बुनकारी का काम, लेकिन ये बखत तो दूसरा काम कर रहे हो।

प्र: क्या कर रहे हैं ?
ज: जैसे कि भाईयन है हमरे साड़ी बिन देते हैं, हम जाकर पहुंचा देते हैं गिरहस्ता के यहां पहुंचा कर पैसा जो लिवाए मे हैं, लिया कर दे देते हैं, घर की जिम्मेदारी जो होती है, वही करते हैं।

प्र: आप के कितने भाई है जो बुनते हैं ?
ज: हमरे पांच भाई, हमें मिलाकर छः भाई।

प्र: और बुनने वाले कितने हैं ?
ज: बुनने वाले, पांच आदमी हैं।

प्र: यानि आप को छोड़कर बाकी लोग बुनते है ?
ज: बुनते तो हम भी हैं, जब खाली रहते हैं, ह सब से तो हम भी बुनते हैं।

प्र: अच्छा बड़े भाई को छोड़कर ?
ज: हां, उ नहीं बिनते।

प्र: तो क्या काम करते हैं ?
ज: तो मतलब नौकरी वाला काम पैसे नई सड़क पर गद्दी है, उसके यहां नौकरी कहते हैं।

प्र: तो आपका परिवार संयुक्त है, खाना पीना एक साथ है ?
ज: नहीं सबका अलग-अलग है।

प्र: तो सबका अलग-अलग खर्च निकलता होगा ?
ज: हां, सबका जैसे साड़ी बिकती है, न तो लिया के सबको अलग-अलग सबका दे देते हैं, सब लोग अपना-अपना जुटा कर खाते हैं।

प्रः तो साड़ी ले आने- ले जाने में आपका क्या फायदा है ?
जः हमरा कुछ नहीं फायदा है, बस भाई की मोहब्बत है, अपना भी उसी में करते हैं, भाई का भी कर लेते हैं।

प्रः तो आपका कैसे चलता है खर्च ?
जः हम करते हैं न अपना भी, इ सब करके बिनते है, इ बात नहीं है, हम तो बता दिये हैं कि.....

प्रः नहीं हम सोचे कि पहुंचाने वाले को भी कुछ मिलता होगा ?
जः ऐसा है न कि देखिये कितना बचता है, वो हम ले लें भाई में से तो परेशानी न हो जायेगा, तो उसके लिए... और तो भाई की अपने है, अब जैसा-जैसा जो रहता है वैसा दे देते हैं। अपना भी उसी में चला लेते है।

प्रः अच्छा आपका कुल करघा मिलाकर भाई का, आपका, पिता जी का सबका मिलाकर कितना करघा है ?
जः आठ।

प्रः और आपके पास कितना है ?
जः एक हमरे पास है, एक-एक से सब भाई के पास है, अम्मा अब्बा के पास एक-एक है, कारीगर लगा दिये है दू ठे उ दू करघे अम्मा अब्बा के पास है। उ जो छोटे बहन-भाई है हमरे उनके लिए चलाने के लिए, मतलब उनका भी चलता रहे हम लोग का भी चलता रहे।

प्रः और एक करघे पर जब आप बुनते है, तो अपना ताना-बाना रहता है या आप कही से लेकर आते हैं ?
जः नहीं अपना रहता है। खाली बस यही इतना रहता है कि गिरहस्ता का नक्सा-पता रहता है। अपनी डिजाइन देकर बिनतायेगा, अपनी साड़ी देगा, और की बिक्री लगा देगा कि इतनी हम आपको बिक्री देंगे।

प्रः अच्छा ये निश्चित रहता है, पहले से कि इतना हम आपको देंगे ?
जः हां निश्चित रहता है, बस कही तनको उकसान हो गया, कुछ ऐब रहा गया जो साड़ी आधे दाम पर चली जाती है।

प्रः एक साड़ी बिनते मे कितना दिन लगता है ?
जः हफ्ता भर।

प्रः और उसका कितना मिल जाता है ?
जः अरे 1500 कभी 1200 रुपया भी जो भी मतलब कई रेंज मे बिनाता है, तो जैसे उम्मे आधा तो लागत में चला जाता है, तानी बाना हू सब, इसके बाद इसमें मजदूरी देना है, उसके बाद सब देने के बाद 100-200 रुपया बच जाता है।

प्रः 100-200 रुपया एक साड़ी से निकल आता हैं ?
जः हां 100-200 निकल आता है।

प्रः तो ऐसे महीने भर का आप लोगों का कितना निकल आता है ?
जः हजार रुपया करीब-करीब तो आ ही जाता है। खर्चे के लिए हम लोग को हो जाता है।

प्र: मतलब चल जाती है ?
ज: चल जाती है मुसीबत में गाड़ी चल जाती है। कुछ कर नहीं पाते हैं, जैसे कोई काम-वाम पड़ गया, तो कर्ज लेना पड़ता है हम लोग को ।

प्र: कर्ज आप लोग किससे लेते हैं, बैंक से या...?
ज: गिरहस्ता से, जिसका बिनते हैं, उसी से कर्ज लेते हैं।

प्र: तो वो क्या ब्याज पर देता है ?
ज: नही नहीं ब्याज सूद पर नहीं वैसे ही देता है।

प्र: फिर आप लोग...?
ज: उसके बाद साड़ी पीछे जितना बांध देगा पचास-सौ रुपया, उ काटता रहता है।

प्र: तो बैंक से क्यों नही लेते ?
ज: बैंक से हमें ब्याज न देना होगा, अगर समय से नाही हम पैसा दिये, तो ब्याज देना पड़ेगा और गिरहस्ता ऐसा है कि हमरा सौ रुपया काटेगा, पचास रुपया काटेगा, हमें समझ में भी नहीं आयेगा, और इस तरह जल्दी खत्म हो जायेगा।

प्र: और आप साड़ी बुनकर उसको पूरा भी कर सकते हैं ?
ज: हां पूरा भी कर सकते हैं। बैंक में नगद जमा करना पड़ेगा और हमें नही ही समेगा, या रोजगार में आकर बैलेन्स में कमी हो गयी, तो हो सकता है बैंक वाला आकर हमरे मकान पर भी हावी हो जाय कि कर्ज लिये हो तो दो।

प्र: इस समय आपके उपर कर्ज है ?
ज: नही इस समय तो कर्ज नहीं है आजाद हैं।

प्र: लेकिन अकसर लेना पड़ जाता है या उसी में चल जाता है ?
ज: अकसर लेना पड़ जाता है, जैसे कि कोई काम धन्धा पड़ गया, घर में बियाह सादी पड़ जायोगी, तो लेना पड़ेगा।

प्र: तो अभी ये जो (अम्मी अब्बू) हज के लिए जा रहे उसके लिए भी क्या कर्ज लिया है ?
ज: ऐसा है कि, ये जो हज के लिए जा रहे, ता भय्या हमरे गद्दी पर नौकरी कर ही रहे हैं, उ मजदूरी से अपना पैसा उठा लिये हैं, गद्दीदार उसको दे दिया, और उसको तनख्वाह में से काटता चला जायेगा।

प्र: ये साड़ी जब बन जाती है, तो आप ले जाकर गिरहस्ता को देते हैं और आप लोग सब गिरहस्ता से आर्डर लेते हैं ?
ज: हां गिरहस्ता से लेते हैं।

प्र: अपने तरफ से नहीं बिनते हैं ?
ज: अपने तरफ से पैसे बिनेंगे, पैसा रहेगा तब तो बिनेंगे, पैसा चाहिए, घर चलाने के लिए चाहिए, तानी बाना का इन्तजाम करना पड़ता है, अगर करेंगे तब तो होगा, नहीं तो उतना नहीं कमाई हो तो, भाई गिरहस्ता से कहे दो भइया

हमे दो, हम बिने ऐसे ही होता है, हम लोगों का।

प्र: तो आगे आप अपना करघा बढ़ायेंगे या फिर मतलब क्या सोचते हें आगे के लिए ?
ज: आगे के लिए तो हम, सोचते हैं कि, भविष्य आदमी सोचता है कि भाई कुछ तरक्की हो, अब कोई ऐसी सुविधा बने कि भाई हम लोग के लिए भी कुछ आसानी हेा जाय बुनकर के लिए जो आदमी परेशान में रहते हैं, खाने के लिए भी परेशान हो जाते हैं कभी-कभी, तो कुछ ऐसी सुविधा हो जाय बन जाय कि इनके साड़ी में सौ दो सौ रुपया केसी बचने लगे, तो इसमें कुछ बनाये, उ अपना करने लगे।

प्र: नहीं लेकिन आप अपना कथकरघा बढ़ायेंगे या फिर पावरलूम लगायेंगे ?
ज: हां हथकरघा बढ़ायेंगे उतना रुपया कहां से आयेगा पावरलूम लगाने का करघा बदलेंगे जब करघा बढ़ने लगी, तो उसमें पावरलूम लगायेंगे, जैसे कि चार से करघा अगर हो गया, तो महिना में 1000रुपया इस तरह हो जायेगा, तो उसमें जुटात-जुटाते पावरलूम लगा सकते हैं, इन्तजाम कर लेगा आदमी।

प्र: अच्छा आप लोग जो साड़ी बनाते हैं, जिसमें ऑर्डर गिरहस्ता का रहता है, तो उसमें जो डिजाइन बनाते है, मतलब जो जकाट वगैरह कटवाने का काम होता है, तो आप लोगों को करना होता है या गिरहस्ता देता है ?
ज: हम लोग का होता है।

प्र: उसका भी आप लोग जिससे बनवाते होंगे, तो उसको अलग से पैसा देना पड़ता होगा ?
ज: हां उसको हम लोग अलग से देते हैं।

प्र: तो सब मिलाकर एक साड़ी का 1500 आता है ?
ज: हां सब मिलाकर।

प्र: जकार का वो लोग कितना लेते हैं ?
ज: जैसे कोई डिजाइन है, अब गिरहस्ता उसका छोटा सेम्पल कटिंग दे देगा हम लेकर जायेंगे, नक्शेबन के पास, त अपना खाका कटाने का अलग से लेगा, अब जब उ तैयार हो जायेगा तो पट्टा काटने वाले के पास जायेंगे, उ काटेगा तो अलग से चार्ज ले लेगा, हो कहे के हिसाब से लेता है, उसके बाद जब सब तैयार हो जायेगा तब उसे लगाकर बीनेंगे।

प्र: अच्छा अब तो बहुत दिन से बिनकारी कर रहे होंगे...?
ज: हां जबसे होश संभाले तब से कर रहे हैं।

प्र: तो अपने कई साल से कर रहे होंगे बुनकारी के इस लिए पुछ रहे हैं, कि जब से आप शुरू किये होंगे, आपकी स्थिति में किस तरह का बदलाव आया है ?
ज: रात-दिन का, रात नि का बदलाव आया है, उस वक्त तो हमरे वालिद साहब करते रहे, अकेले ही एक करघे से हम लोग आठ दस भाई लोग सबको खिलाते-पिलाते रहे, अब स्थिति इतनी खराब हो गयी है कि, हम लोग का चार आदमी का परिवार एक करघे में चलाना मुश्किल है।

प्र: कब से ये ज्यादा दिक्कत आने लगी है ?
ज: ये करीब-करीब 10-12 साल से।

प्रः उसका कारण आपको क्या लगता है ?
जः कारण हम क्या बता सकते हैं, आप ही बता दीजिये।

प्रः हमको तो पूरी-पूरी जानकारी नहीं मिली लेकिन आप लोग को कुछ कारण नजर आता है जैसे मान लीजिये पावर लूम हुआ तानी मंहगा हो गया क्या वजह है ?
जः तानी मंहगा,....अब समझिये ऐसी कि जैसे बनारस में पावरलूम लगा हुआ है न जो आदमी दाल रोटी के लिए परेशान होगा तो सोचेगा कि हमरे... कुछ न कुछ करना है, तो वो अपना पावरलूम लगायेगा, दाल रोटी चलाने के लिए, तो हम उसके लिए बुरा क्यों कहें भाई, भाई वो अपने तरक्की के लिए किया है, तो वो तो उसकी किस्मत में है, अब जो हैण्ड का काम है, वो तो बनारस का मशहूर काम है, उसको तो बढ़ना ही चाहिए आगे।

प्रः तो क्या तानी मंहगा हुआ है या रेशम मंहगा हुआ है या एक्सपोर्ट में दिक्कत क्या वजह है ?
जः तानी मंहगी भी भयी है, उसके बाद साड़ी बिकने में भी परेशानी हो रही है, कब्बो-कब्बो ग्राहक आ गये तो माल ले गये नहीं तो दुकान में पड़ा रहेगा माल, जब भी जायेंगे, गृहस्था के पास तो यही कहेगा कि माल रखा हुआ है, माल बिक नहीं रहा हैं, करघे कम कर दो, बिकना धीमा कर दो, यही स्थिति है, यही वजह है, और उसके बाद कुछ मंहगाई भी जो है पहले क्या था और अब, हमरे छोटा में कड़ुआ तेल 7 या 8 रुपया किलो रहा आज 24रुपया किलो, यही सबका असर है, लेकिन साड़ी का दाम तो वही चल रहा है, आज भी-जो पहले था, वही आज भी है।

प्रः और रेशम का दाम ?
जः रेशम के दाम में 800 रुपया का फर्क है, पहले के मुकाबले।

प्रः 800 का फर्क आ गया ?
जः हां 800 का, 800 में जब रेशम क्या तो वो बरबत हम लोग 8 दिन की बन्दी किये थे, पूरी मुहल्ले के लोग, आठ दिन की बन्दी कर दिये कि भाई, रेशम मंहगा हो गया, तो उसमें कोई असर नहीं पड़ा, 12 दिन तक रहा, काम जब खुला है तो, रेशम 800 से 1200 रुपया हो गया। हालांकि ऊपर वाले की मर्जी थी, तो उहट हो गया उनका, पर उससे बाद व्यापारी, ग्राहक अच्छा आने लगे, निकासी हो गयी साड़ी की, कुछ रेट भी बंद गया उस वक्त हम लोग सकून से रहे, कि रेट बढ़ जात रहा, पर अब तो रेट घटने के सिवाय बढ़ ही नहीं रहा।

प्रः साड़ी दाम में क्या बदलाव आया यानि सस्ती हुई या मंहगी हुई है, इतने सालों में ?
जः हर आदमी सस्ता माल मांग रहा है।

प्रः मतलब का दाम कम हुआ है ?
जः हां, जैसे भी लागत... जैसे कि माल मार्केट में हम जो भात का सामान ला रहे हैं, तो आज की उसका दाम वढ़ ही गयी मार्केट में, साड़ी में वही चीज हम लगा रहे हैं, उ लेकर जायेंगे तो कदियों हमें सस्ती साड़ी चाहिए, अब बताइये सस्ता हम मंदा से लेकर आयें।

प्रः अब आप लोग, जैसे पहले 12 दिन की बन्दी किये थे तो अब इसके विरोध में कुछ समिति वगैरह बनाकर नहीं करेंगे कि ?
जः नहीं हम लोग जो बन्दी किये थे, उ विरोध के लिए नहीं किये थे, कम लोग तो बन्दी इस वजह से किये कि हो सकता है ऊपर वाले से कोई गर्दिश हो, हम लोग को कर दिये हो तो दुआखानी के लिए, आठ दिन की हम लोग

दुआखानी किये रहे।

प्र: लेकिन यहां पर ऐसा कोई संगठन या समिति नहीं है जो कि इन सब मुद्दो को उठाकर लड़े, सरकार से मांग करे ?
ज: ऐसी कोई समिति नहीं हैं।

प्र: कभी मतलब जब उनका दोश संभाले है तब से नहीं रही है ?
ज: हां तब से नहीं रही है, न आज बनी है।

प्र: और आगे बनेगी ?
ज: संभावना अभी नहीं है। (हंसी)

प्र: क्यों संभावना क्यों नहीं है ?
ज: वैसे हम आदमी तो अपनी दाल रोटी में गिरफ्तार है, ये सब करेगा तो कहां से होगा, अपना परेशानी हल करेगा तो घर की, ये सब करने के लिए समय चाहिए और हर आदमी अपना करघा बिनने में फंसा हुआ है और अपने बाल-बच्चे में परेशान है, तो वो समिति क्या बनायेगा और जो समिति बनाया भी है तो दूसरे लादन की बनाया है।

प्र: जैसे ?
ज: जैसे कि है उसी लाइन में लेकिन वो गिरहस्ता का मेजारिटी अलग से बनाया है, 50-60 आदमी को लेकर समिति बनाया है, उसमें उसका फोटो खिंचवा दिया और बोला कि हम सरकार की तरफ से पैसा पास करवायेंगे, ये करेंगे, वो करेंगे, पर कोई नतीजा सामने नहीं देखा रहा हम लोगों को, उसमें क्या आता है क्या नही, ये उसका ईमान जाने, तो जाने।

प्र: आप लोग कभी, पूछ-ताछ भी नहीं किये ?
ज: नहीं हम लोग कभी पूछ-ताछ नही किये।

प्र: पूछ-ताछ तो करनी चाहिए थी ?
ज: पूछ-ताछ करके क्या होगा, तो बोलेगा कि अरे बस उस दिन खिंचवा दिये फोटो।

प्र: अच्छा बैंक से लोन-वोन देने की जो सरकार ने एक बार व्यवस्था की थी, की थी या नहीं ?
ज: की थीं जरूर, लेकिन ये जो तो लोन, हम लोग ये देखिये कि अगर लोन ले लेंगे, तो उसको, देंगे कइसे, आज तो ले लेते हैं, कारोबार अगर गिरहस्ता कहे कि हमें ये माल नहीं कहिए, और बैंक का डेट पूरा हो जाए कि हमें हमारा पैसा चाहिए तो हम अपना माल तो देंगे नही, उसको तो पैसा चाहिए नगद इसी वजह से नहीं लेते।

प्र: वैसे योजना ता है न ?
ज: हां सुविधा बनायी जरूर थी सरकार ने, अब ये वक्त है या नहीं, हम नहीं जानते।

प्र: अब ये बताइये कि इतनी दिक्कत के बाद आप इसी पेशे में रहना चाहेंगे या....
ज: हम तो छोड़ना चाहते है, इसको तो सोच रहे हैं कि किसी तरीके से मशीन पावरलूम की लग जाये, तो हम लोग का दाल रोटी का जुगाड़ हो जायेगा। लेकिन पावरलूम भी लगाकर क्या फायदा क्योंकि बत्ती की समस्या ऐसी हैं कि

इनकी वजह से भी पावरलूम खड़ी रहती है, अब सुबह लाइन चली गयी तो 2 बजे आयेगी फिर उसके बाद एक-एक घण्टा बाद काटता चला जायेगा, रात में 10 बजे से देगा फिर रात के दो बजे काट देगा, फिर सुबह चार बजे भोर में काटेगा फिर सुबह 9 बजे ...ऐसा है लाइन का।

प्र: और बिजली का बिल आपका घरेलू दर पर आता है या कारखाने वाली दर पर ?
ज: नहीं कारखाने वाला आता है।

प्र: एक महीने में कितना आ जाता है ?
ज: करीब 700-800 अटे छः ठे भाई हम लोग हैं, अपना सब कोई बांट में समझ लेते हैं।

प्र: अच्छा लेकिन आपके चदां मशीन तो चलती नहीं फिर कारखाने की दर से क्यों ले रहे हैं ?
ज: इसके लिए तो हम बता नहीं सकते सबके यहां ऐसा दी है।

प्र: विरोध नहीं हुआ ?
ज: विरोध क्या होगा, साफ कहेगा कि तुम लोग चोर हो, चोरी करते हो बिजली की लेकिन वो उसका ईमान जाने दम जानते है कि हम क्या करते हैं ।

प्र: सबके यहां यही हाल है ?
ज: कुछ के घर लगा है, कुछ के नहीं।

प्र: अच्छा कुछ के घर में घरेलू दर से आता है कुछ के घर में कारखाने की दर से ?
ज: हां हां जहां पावरलूम से काम होता है वहां कारखाने की दर से।

प्र: पर आपके घर तो एक भी पावरलूम नहीं है फिर ?
ज: अन्य- हम लोग के घर से एक बार झगड़ा हो गया था अब्बा गाली-वाली दे दिये थे तो काट दिया बाद में जब सही कराये तो कारखाने की दर से आने लगा।

प्र: अच्छा लेकिन पावरलूम का असर तो हुआ हे न करघे पर ?
ज: हां हुआ है लेकिन बेहतर बेटर हुआ है, उ लोग तो आजाद हो गये।

प्र: लेकिन हथकरघा पर तो प्रभाव आया है ?
ज: प्रभाव आया जरूर है, हम तो कह रहे हैं लेकिन जो लगा लिया तो बेहतर किया, उसका तो सकून से चलने लगा। हथकरघा वाले भी जाकर उसमे यहां मशीन चलाने लगे अपना बीनने से बेहतर है कि दूसरें की मजदूरी करना।

प्र: अच्छा सरकार की एक्सर्पोट नीति में भी कुछ बदलाव आया है क्या ?
ज: जब अमरीका पर लादेन वाला हमला हुआ था, थोड़ा सा तब बहा रहा लेकिन एक्सर्पोट लाइन बहुत बढ़िया है, वो सही चल रहा है, उसके कोई गड़बड़ी नहीं है, यहां का जो मार्केट है, वो बुनकर को हमेशा दबा कर रखना चाहता है और सोचते है कि वो आगे बढ़ जायेंगे तो हमारी नौकरी कौन करेगा, हमें माल कौन देगा, यही वजह है।

प्र: बीच में कौन लोग खाते है गिरहस्त लोग या ऊपर वाले ?

ज: चौक वाले लोग।

प्र: उनको तो फायदा हो रहा है ?
ज: हां उनको तो फायदा हो रहा है परेशानी तो हम लोगों को है, फायदा ऐसे है, हमरा माल जायेगा तब हमें मिलेगा पैसा।

प्र: और गिरहस्ता लोगों का क्या रोल होता है ?
ज: गिरहस्ता का रोल, ऐसे होता है कि हम लेकर गये उनमें यहां माल तो अपना पैसा देकर हमें ले लेगा माल, और चौक वाले दे तो गिरहस्ता से माल लेंगे तो पैसा जब तक आगे से नहीं आयेगा, तब तक उसका पैसा नहीं देंगे।

प्र: लेकिन फिर भी गिरहस्ता को आप लोगों से ज्यादा फायदा होता है ?
ज: हां फायदा होता है तब न उनके पास पैसा हो गया हे तो कारीगर से माल ले लेते हैं, उ अपना सह जाते है दो चार महीना।

प्र: बुनकारी के अलावा भी आपका कोई आर्थिक स्रोत है जरिया ?
ज: नहीं न कोई दुकानदारी न कोई खेत बस इसी से चलता है सब लेकिन अब उससे घबरा गई है तबीयत अब सोचते है कि इसको छोड़ दें।

प्र: मशीन लगाने का सोच रहे हैं ?
ज: हां इस वक्त यही सोच रहे हैं या फिर नही भी लगेगी तो अपने भाइये संगे दूसरे के जाकर मशीन चला लेंगे, सब भाई कह रहे हैं कि भइया अब हमें बीनना नहीं है, इतना मेहनत करो करघे में गोड़ लटकाये, सर्दी लगती है, समझिये अंगुली फुल जाती है, और फायदा कुछ नहीं देखा रहा है, इससे बेहतर है कि हम कहीं जाकर मशीन चला लें। हम भी यही सोच रहे हैं।